Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य

(Professional Social Work and its Values)

B.S.W.-121

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rajesh Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य

(Professional Social Work and its Values)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

व्यावसायिक समाज कार्य का परिचय
(Introduction to Professional Social Work)

1. समाज कार्य अवधारणाओं का परिचय–I 1
   (Introduction to Social Work Concepts-I)

2. समाज कार्य अवधारणाओं का परिचय–II 10
   (Introduction to Social Work Concepts-I)

3. विदेशों में समाज कार्य का आविर्भाव 19
   (Emergence of Social Work Abroads)

4. भारत में समाज कार्य परम्परा और शिक्षा का विकास 29
   (Evolution of Social Work Tradition and Education in India)

समाज कार्य के मूल तत्व
(Basics of Social Work)

5. व्यावसायिक समाज कार्य : प्रकृति, क्षेत्र, उद्देश्य और कार्य 37
   (Professional Social Work: Nature, Scope, Goals and Functions)

6. व्यावसायिक समाज कार्य : सामान्य सिद्धान्त और उनका अनुप्रयोग 45
   (Professional Social Work: Generic Principles and their Application)

7. भारत में स्वैच्छिक क्रिया और समाज कार्य 55
   (Voluntary Action and Social Work in India)

8. भारतीय सन्दर्भ में समाज कार्य नैतिक संहिता 64
   (Social Work Ethics in Indian Context)

समाज कार्य के मूल्य-I
(Values of Social Work-I)

9. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानवता की सेवा 73
(Service to Humanity as a Value of Social Work)

10. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सामाजिक न्याय 80
(Social Justice as a Value of Social Work)

11. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में मानव सम्बन्धों का महत्त्व 87
(Importance of Human Relationships as a Value of Social Work)

12. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा 95
(Dignity and Worth of the Person as a Value of Social Work)

13. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सत्यनिष्ठा 101
(Integrity as a Value of Social Work)

14. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सुयोग्यता/सक्षमता 107
(Competence as a Value of Social Work)

समाज कार्य के मूल्य-II
(Values of Social Work-II)

15. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में व्यवसाय के प्रति निष्ठा 115
(Loyalty to Profession as a Value of Social Work)

16. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में देशभक्ति 124
(Patriotism as a Value of Social Work)

17. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में सांस्कृतिक संवेदनशीलता 133
(Cultural Sensitivity as a Value of Social Work)

18. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में परिश्रम 140
(Hardwork as a Value of Social Work)

19. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में उत्तरदायित्व और वचनबद्धता 146
(Responsibility and Commitment as a Value of Social Work)

20. समाज कार्य के एक मूल्य के रूप में शिक्षकवाद 155
(Teachership as a Value of Social Work)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य

(Professional Social Work and its Values)

B.S.W.-121

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. सामाजिक कार्य के लिए सामाजिक नेटवर्क के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न-4

प्रश्न 2. संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक कार्यों के विकास का पता लगाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'अमेरिका में समाज कार्य का इतिहास'

प्रश्न 3. सामाजिक कार्य का दायरा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-40, प्रश्न-3

प्रश्न 4. सामाजिक कार्य में स्वैच्छिक क्रिया की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-57, 'स्वैच्छिक क्रिया एवं समाज कार्य की प्रासंगिकता'

प्रश्न 5. सामाजिक कार्य पेशे के प्रमुख सेवा क्षेत्रों का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-74, 'समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्र'

प्रश्न 6. सामाजिक कार्य पेशे में सामाजिक न्याय के महत्त्व को समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-83, प्रश्न-4

प्रश्न 7. अंधभक्ति और रचनात्मक देशभक्ति के बीच अन्तर बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-127, प्रश्न-2

प्रश्न 8. कठोर परिश्रम के मूल्य के सिद्धान्तों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-140, 'परिचय' तथा पृष्ठ-142, प्रश्न-2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य

(Professional Social Work and its Values)

B.S.W.-121

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. समाज कार्य अभ्यास के लिए सामाजिक नेटवर्क के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न-4

प्रश्न 2. संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक कार्यों के विकास का पता लगाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'अमेरिका में समाज कार्य का इतिहास'

प्रश्न 3. सामाजिक कार्य पेशे की विभिन्न विचारधाराओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, प्रश्न-6

प्रश्न 4. पारिवारिक और सामुदायिक स्तर पर समाज कार्यों के हस्तक्षेप का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-74, 'समाज कार्य के प्रमुख सेवा क्षेत्र'

प्रश्न 5. समाज कार्य पेशे के संबंध में स्वैच्छिक क्रिया की अवधारणा को समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-57, प्रश्न-1

प्रश्न 6. स्वैच्छिक क्रियाओं के हस्तक्षेत्र के क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-55, 'अंत:क्षेप के क्षेत्र एवं स्वैच्छिक क्रिया के परिणाम'

प्रश्न 7. बाल और पारिवारिक सेवाओं अथवा चिकित्सा और जन स्वास्थ्य सेवाओं में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका पर चर्चा कीजिए। उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-75, प्रश्न-4 तथा पृष्ठ-74, 'चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं'

प्रश्न 8. उदाहरणों की सहायता से 'सामाजिक पूँजी' के रूप में मानवीय संबंधों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-89, प्रश्न-1

प्रश्न 9. समाजकार्य पेशे में किसी व्यक्ति की गरिमा और मूल्य की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-95, 'समाज कार्य मूल्य के रूप में व्यक्ति का मूल्य और गरिमा'

प्रश्न 10. संस्कृति क्या है? सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच सांस्कृतिक संवेदनशीलता को कैसे विकसित किया जा सकता है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-133, 'संस्कृति क्या है?', 'सांस्कृतिक संवेदनशीलता', 'सांस्कृतिक संवेदनशीलता कैसे प्राप्त की जाती है?', पृष्ठ-134, 'सांस्कृतिक संवेदनशीलता का विकास कैसे किया जाता है', 'सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील समाज कार्यकर्ता का वैयक्तिक योगदान'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

व्यावसायिक समाज कार्य और इसके मूल्य
(Professional Social Work and its Values)

समाज कार्य अवधारणाओं का परिचय-I
(Introduction to Social Work Concepts-I)

1

परिचय

सामाजिक रूप से समाज कार्य कम मान्यता प्राप्त व्यवसाय है। समाज कार्य विषय में इसके परिणामों में सहज प्राप्ति की दृश्यता को प्रमाणित करने की क्षमता नहीं है, जो इसके अभ्यास का अनुकरण करते थे। समाज कार्य व्यवसाय के रूप में नया है। अत: नए विकास के कारण विभिन्न शब्दों, जो कक्षा में अध्यापन समाज कार्य में शोध करने और समाज में जरूरतमंद लोगों के साथ व्यावसायिक व्यवहार करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। विषय के रूप में अत्यधिक भ्रम की स्थिति में हैं। सामाजिक कार्य में पृथक्-पृथक् अवधारणाओं का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें दान, श्रमदान, सामाजिक क्रिया, सामाजिक आंदोलन, सामाजिक न्याय, सामाजिक नीति, सामाजिक सुधार, समाज कल्याण इत्यादि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

परोपकार, स्वैच्छिक क्रिया और श्रमदान

भारतीय समाज में भिक्षा देने को समाज कार्य माना जाता है और उसे परोपकार से जोड़ा जाता है, जो सही नहीं है। वेबस्टर्स इन्साइक्लोपेडिक अनएम्ब्रिज्ड डिक्शनरी में परोपकार शब्द को परिभाषित करते हुए निर्देशित किया है कि भौतिक पुरस्कार की आशा किए बिना परोपकार अंतक्रियाएं भिक्षा देने के रूप में जरूरतमंद लोगों के लिए कोई अन्य प्रकार की परोपकारी क्रियाएं करना परोपकार होता है। विश्व भर में अधिकांश धर्मों में दान को एक नैतिक गुण माना जाता है, जिसका उनके अनुयायियों को धारण करना चाहिए। मुजीब के शब्दों में, प्रत्येक धर्म दान की आज्ञा देता है और दान के कुछ स्वरूप सभी धर्मों के लिए आवश्यक तत्व होते हैं। हिंदू धर्म में दान को पवित्र माना जाता है। ऋग्वेद में दान का वर्णन करते हुए लिखा है कि ईश्वर शक्ति की प्राप्ति हेतु जब भगवान शंकर की अत्यधिक स्तुति की गई तो उसमें दान को बढ़ावा देने का भी उल्लेख किया गया है और हिंदू धर्म बिना ब्राह्मण के परोपकार के प्रभाव का समर्थन करते हैं। हिंदू धर्म में यह भी वर्णित किया गया है कि दान उस व्यक्ति को दिया जाना चाहिए, जो उसके योग्य हो। ईसाई ग्रंथ बाइबिल में भी परोपकार पर अत्यधिक जोर दिया गया है। यहूदी धर्म में ईश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए जरूरतमंदों की देखभाल के बारे में निर्देश दिए गए हैं। ईसाई धर्म में दूसरों के प्रति स्नेह द्वारा बंधुता का समर्थन किया गया है। इस्लाम धर्म में परोपकार को प्रार्थना के संतुल्य माना गया है। इस्लाम धर्म के 5 मूल सिद्धांतों में से एक सिद्धांत भिक्षा देना है। जकात के अंतर्गत प्रत्येक धार्मिक मुसलमान अपनी वार्षिक आय का 40वां भाग दान करता है। पारसी धर्म में दीन-दुखियों की सहायता करने को प्रशंसनीय कार्य माना गया है। बौद्ध और जैन दोनों धर्म गरीब और दीन-दुखियों के लिए करुणा रखते हैं। सिख धर्म के लिए संप्रदाय धार्मिक विश्वास पर विचार किए बिना संपूर्ण मानवता के प्रति स्वैच्छिक सेवा का भाव रखता है। गुरु नानक देव कहा करते थे कि जो संसार में दूसरों की सेवा करता है, ईश्वर के दरबार में एक आसन प्रदान करता है। गुरु गोविंद सिंह ने एक राजआज्ञा प्रकाशित की थी, जिसके अनुसार प्रत्येक सिख को अपनी आमदनी का दसवां भाग दान करना चाहिए। दान किसी भी रूप में हो सकता है, जो सामाजिक कार्य के लिए प्रयोग में लाया जाए।

स्वैच्छिक क्रिया–मानव का स्वाभाविक गुण है कि कष्ट के समय पीड़ित भाई-बंधुओं के प्रति करुणा का भाव रखता है। विपत्ति के समय आधारभूत आवश्यकता के कारण लोग अपनी इच्छा से निरंतर आगे आते हैं और लोगों की सहायता करते हैं। समाज में लोग नैतिक और आध्यात्मिक विकास के अतिरिक्त भौतिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से भी दान करते हैं और विभिन्न प्रकार की सहायता का प्रबंध करते हैं। परोपकारी भावना लोगों को समाज के सदस्यों की सेवा करने की निष्ठा प्रदान करती है और लोग जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए निस्वार्थ भाव से हाथ आगे बढ़ाते हैं और दान करते हैं। दान किसी भी माध्यम से हो, लोगों की सेवा के लिए किया जाता है और यह एक स्वच्छ क्रिया है। साधारण शब्दों में, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मदद सेवा है, जो लोग करुणा की अनुभूति से सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से दूसरों की मदद विशेष रूप से उन लोगों के लिए, जो गरीबी, खराब स्वास्थ्य, निरक्षरता, अत्याचार, निष्क्रियता, शोषण, दमन, दुर्व्यवहार इत्यादि से पीड़ित होते हैं, उनके लिए उपलब्ध करवाते हैं। स्वैच्छिक क्रिया के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं–

1. स्वैच्छिक क्रिया में सभी संभव तरीकों द्वारा चाहे वह मौद्रिक हो या स्वाभाविक प्रेरणा के माध्यम से दूसरों की सहायता और कल्याण करना है।

2. स्वैच्छिक क्रिया का यह गुण है कि सहायता देने के बदले सहायता करने वाला किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए किसी प्रकार का कोई लालच या उपेक्षा नहीं करता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. सामाजिक संबंधों की समझ और आवश्यकता के समय दूसरों की सहायता की जाती है।

4. मानवता की सेवा के लिए स्वैच्छिक क्रिया से दान किया जाता है।

5. एक व्यक्ति का विश्वास है कि स्वैच्छिक रूप से दूसरों के लिए सेवा भाव रखें।

श्रमदान (स्वैच्छिक शारीरिक श्रम)–श्रमदान दो शब्दों के मेल से बना है–श्रम और दान। श्रम से तात्पर्य शारीरिक श्रम से है और दान जो लोगों द्वारा किया जाता है। अधिकांश लोगों ने श्रमदान को सामाजिक कार्य के साथ जोड़ा है। श्रमदान शब्द की उत्पत्ति हिंदी भाषा से हुई है। श्रमदान से तात्पर्य है भवन निर्माण से है। यह निर्माण वृक्षारोपण के कार्य के प्रकारों के माध्यम से समाज सामूहिक भलाई को बढ़ावा देने हेतु सुरक्षित रूप से श्रम करने का कृत्य श्रमदान कहलाता है। श्रमदान कई प्रकार से किया जाता है। श्रमदान की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ शारीरिक श्रम स्वेच्छापूर्व वक्ता सामूहिक और सहकारी रूप से प्रयास करना, सामान्य जनता के हितों की रक्षा करना, असामान्य जनता की भलाई से संबंधित होता है। भारत में कल्याण को बढ़ावा देने के लिए लोगों में साथ-साथ कार्य करने की एक बहुत स्वस्थ परंपरा है। सामाजिक विकास की प्रारंभिक अवस्था में जीवन अत्यंत कठिन था। परिष्कृत औजार और साधन उपलब्ध नहीं थे तो लोग स्वैच्छिक रूप से श्रमदान में योगदान करते हुए साथ-साथ कार्य करते थे। आज के समय में असंख्य ऐसे उदाहरण हैं, जहां पर लोग जीवन और निर्वाह की दशा में सुधार करने के लिए सामूहिक रूप से श्रमदान करते हैं। यहां सड़कों, नदी, नालों और तालाबों को, सिंचाई के साधनों, कूड़ा खाद के गड्ढों, बांधों अथवा तट बंधनों का निर्माण, सराय, धर्मशाला इत्यादि के निर्माण के माध्यम से अपने शारीरिक श्रम के योगदान के द्वारा साथ-साथ कार्य करते हैं। सरकार द्वारा लोगों में समाज कार्य की भावना एवं श्रम की प्रतिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना, नेशनल कैडेट कोर जैसे प्रयोजन किए जा रहे हैं। लोगों की परिस्थितियों को बेहतर बनाने हेतु शिक्षित युवक समाज कल्याण के लिए स्वैच्छिक रूप से शारीरिक श्रमदान कर रहे हैं। श्रमदान देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है।

सामाजिक आन्दोलन और समाज सुधार

सामाजिक आंदोलन–प्रजातांत्रिक देश में नागरिकों को सरकार के द्वारा जीवन में सुधार लाने हेतु आश्वासन दिया जाता है, जिसके लिए व्यक्ति व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से अनेक प्रयास करते हैं। आंदोलन प्रजातांत्रिक व्यवस्था में एक बहुत सामान्य और स्वाभाविक गुण है। बियानी के शब्दों में, सामाजिक आंदोलन वस्तुतः शब्द के प्रयोग के विषय में एक सन्निहित होता है। अनुभवसिद्ध सहमति का पूर्ण प्रभाव है। कॉल बिल क्लिंटन के अनुसार एक सामाजिक आंदोलन किसी भी साधन द्वारा किसी भी दिशा में परिवर्तन को बढ़ावा देने हेतु सामूहिक प्रयत्न है। मैकएडम एटल के अनुसार सामाजिक आंदोलन, सामूहिक, सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य के एक असमान प्रतिबिंब की ओर संकेत करता है। सामाजिक आंदोलन सामाजिक पुनर्संगठन का लक्ष्य रखते हुए सामूहिक क्रिया के रूप में विभिन्न प्रकारों को सम्मिलित करते हुए प्रतिरोध का एक माध्यम है। एक सामाजिक आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

1. विद्यावान सामाजिक संरचना और व्यवस्था से उत्पन्न असंतोष अत्यधिक उपेक्षित हितों के संरक्षण के लिए किया गया एक संघर्ष है।

2. वचनबद्धता और समर्पण के प्रति जागरूकता के लिए सामूहिक रूप से समान रुचि रखने वाले लोगों या संगठनों द्वारा की गई क्रिया है।

3. अन्य प्रकार की गतिविधि पर सामान्य रूप से सहमति को आरंभ करना सामाजिक आंदोलन की विशेषता है।

4. समाज की बुराइयों के निवारण, सामाजिक मान्यता, मानवाधिकार, न्याय, स्वायत्तता के विचारों के लिए एक प्रकार का निर्देशन करना।

5. विद्रोह, बगावत, क्रांति, प्रदर्शन, हड़ताल, घेराव, बंद इत्यादि एक सामाजिक आंदोलन की विशेषताएँ हैं।

6. सामाजिक आंदोलन अस्थिर और अल्पकालिक प्रवृत्ति के होते हैं।

वर्तमान समय में समाज में विद्यमान बुराइयों को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता है। कुछ बुराइयों जैसे-सती अस्पृश्यता, बंधुआ मजदूरी, बालश्रम और वन की कटाई इत्यादि जो विद्यमान परिस्थिति से असंतोष उत्पन्न करने के स्रोत हैं, के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन किए जाते रहे हैं। समाज के कुछ लोग कदाचित प्रभावी समूह अपराधियों के संगठित समूह माफिया डॉन इत्यादि, सामाजिक आंदोलनों का दुरुपयोग कर कर सकते हैं अथवा शोषण और अनावश्यक पीड़ा के लिए इनका दमन कर सकते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रसार ने विभिन्न क्षेत्रों को एक-दूसरे के साथ जोड़ दिया है। अतः सूचना प्रौद्योगिकी में हुई तीव्र वृद्धि ने विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक आंदोलनों के आविर्भाव अवध अभाव को तेज किया है। सामाजिक आंदोलन बेशक सफल नहीं हो पाते हैं, परंतु आंदोलन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ संभावित प्रयास करते हैं। आज के समय में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक संगठन हैं, जो सामाजिक आंदोलन को बढ़ावा दे रहे हैं। समाज कार्य के लिए सामाजिक आंदोलन अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि यह सामाजिक संरचना में इच्छित परिवर्तन को उत्पन्न करते हैं और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करते हैं।

समाज सुधार–समय तथा परिस्थितियों के कारण प्रत्येक समाज में सांस्कृतिक पतन प्रारंभ होता है। विशेष रूप से ऐसे समुदाय में जहां इसके अनुयायी विभिन्न प्रकार की प्रथाओं और परंपराओं के पीछे के मूल उद्देश्य को भूल जाते हैं। विभिन्न लोगों के द्वारा संस्कारों और धार्मिक अनुष्ठानों का धार्मिक रूप से पालन किया जाता है। लेकिन इसके पीछे क्या कारण है उनको पता नहीं होता है। विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान सामाजिक बुराइयों को बढ़ाते हैं, जो व्यक्ति के विकास के मार्ग को अवरुद्ध करते हैं। सामाजिक बुराइयों के गंभीर दुष्प्रभाव होते हैं। इन्हें दूर करने के लिए इनसे मुक्ति पाने के लिए साधनों की योजना बनाते हैं और दूर करने के लिए जो शुरुआत की जाती है, उसे समाज सुधार कहते हैं। एम.एस. गोरे के शब्दों में, समाज सुधार समझाने-बुझाने और जन शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से लोगों के व्यवहार के वास्तविक प्रतिमान में परिवर्तन उत्पन्न करने हेतु सुविचारित प्रयत्न को सम्मिलित करता है। समान रुचि रखने वाले लोगों द्वारा बनाए गए स्वदेश से पूर्ण निर्मित सामूहिक और अहिंसात्मक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रयासों को सामाजिक सुधार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समाज सुधार की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. समाज सुधार ऐसी बुराइयों को दूर करने के लिए काम करता है, जो समुचित मानव वृद्धि और सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

2. समाज सुधार सामाजिक बुराइयों को कम करने और उन्मूलन करने के लिए लोगों द्वारा सामूहिक रूप से किया गया प्रयास है।

3. समाज में प्रचलित परिस्थिति के साथ पूर्णतया संतोष होना समाज सुधार की विशेषता है।

4. जिन क्षेत्रों में अलगाव, बुरे आचरण विद्यमान हैं, वहां पर अहिंसात्मक तरीकों और साधनों की नियुक्ति करना और समाज में विद्यमान बुराइयों को दूर करना है।

समाज सुधार को विद्रोह समझ लिया जाता है, लेकिन दोनों में विभिन्नता है। समाज सुधार और विद्रोह में कुछ समानताएं हैं- जैसे दोनों ही मामलों में समाज में विद्यमान परिस्थिति के प्रति असंतोष उल्लेखनीय है। समाज सुधार और विद्रोह दोनों ही सामाजिक परिस्थितियों में स्वैचिछक परिवर्तनों को उत्पन्न करते हैं और विकास को प्रोत्साहित करते हैं। समाज सुधार और विद्रोह समाज के आलसी और निष्क्रिय सदस्यों को जागरूक करते हैं। समाज सुधारक सत्ता तक पहुँचते हैं और उन्हें प्रभावित करते हैं। विद्रोही मूल रूप से सामाजिक जीवन के निश्चित क्षेत्रों में संपूर्णता सुधार करना चाहते हैं। समाज सुधार के माध्यम से समाज में फैले हुए व्यापक कुरीतियों को दूर करके सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करना सामाजिक कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

सामाजिक संजाल (नेटर्वक)

संजाल शब्द तंतु रेखाओं या उदाहरणों या उसी तरह के किसी जाल के संयोजन की ओर संकेत करता है। संजाल शब्द की खोज लगभग 1930 के दशक में हुई। 1950 के दशक में सामाजिक जाल एक स्पष्ट कार्यप्रणाली अस्तित्व में आई है। संजाल रूपक को सुव्यवस्थित करने में जोर होम मैन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्य में संजाल शब्द का प्रयोग विशिष्ट अर्थ में किया जाता है, जो समान उद्देश्यों के लिए प्रयत्न में लगे होते हैं। एक संबंधित और प्रभावी ढंग के साथ कार्य करने के विचार से स्थापित होते हैं। सामाजिक संजाल का सामाजिक कार्य के साथ महत्त्वपूर्ण संबंध है। इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. समान सुरुचि रखने वाले गैर-सरकारी संगठन, स्वैच्छिक संगठन, समूह, समुदाय एक विशेष स्थान पर विशिष्ट उद्देश्य के लिए कार्य कर रहे होते हैं। उनका स्वयं का एक जाल होता है, इसलिए वे साथ आते हैं।

2. गैर-सरकारी संगठन, समुदाय आधारित संगठन और स्वैच्छिक संगठन कुछ भलाई के लिए कार्य करने हेतु आपस में सहमत होते हैं।

3. ये गैर-सरकारी संगठन, समुदाय और स्वैच्छिक संगठन कार्य करने के लिए अपने सामाजिक संजाल को सुदृढ़ करने के लिए एक अकेली विधि के लिए योगदान करते हैं।

4. निबंध संगठन एक सामान्य रूप से सहमति पर आधारित आचार संहिता के प्रति दृढ़ रहने और उनके अनुपालन से सहमत होते हैं।

5. गैर-सरकारी संगठन, समुदाय आधारित संगठन और स्वैच्छिक संगठन अपने समान हितों के संरक्षण और पद्धति के लिए सामाजिक संजाल स्थापित करते हैं।

6. गैर-सामाजिक संचार संजाल समाज कार्य के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि समाज में व्याप्त बुराइयों के उन्मूलन के लिए विभिन्न प्रकार के संगठन संगठित मन से प्रयत्न करते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. परोपकार क्या है?

उत्तर–परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई करना। सच्चा परोपकारी वही व्यक्ति है, जो प्रतिफल की भावना न रखते हुए परोपकार करता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि शुभ कर्म करने वालों का न यहां, न परलोक में विनाश होता है। शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है। कोई व्यक्ति जीविकोपार्जन के लिए अनेक उद्यम करते हुए यदि दूसरे व्यक्तियों और जीवधारियों की भलाई के लिए कुछ प्रयत्न करता है तो ऐसे प्रयत्न परोपकार की श्रेणी में आते हैं। मन, वचन और कर्म से परोपकार की भावना से कार्य करने वाले व्यक्ति संत की श्रेणी में आते हैं। ऐसे सत्पुरुष जो बिना किसी स्वार्थ के दूसरों पर उपकार करते हैं, वे देवकोटि के अंतर्गत कहे जा सकते हैं। परोपकार ऐसा कृत्य है, जिसके द्वारा शत्रु भी मित्र बन जाता है। यदि शत्रु पर विपत्ति के समय उपकार किया जाए तो वह भी उपकृत होकर सच्चा मित्र बन जाता है।

भौतिक जगत का प्रत्येक पदार्थ ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षी भी मनुष्य के उपकार में सदैव लगे रहते हैं। यही नहीं सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, फल, फूल आदि मानव कल्याण में लगे रहते हैं। इनसे मानव को न केवल दूसरे मनुष्यों, बल्कि पशु-पक्षियों के प्रति भी उपकार करने की प्रेरणा मिलती है अर्थात् परोपकार के भाव में भौतिक पुरस्कार की आशा किए बिना जरूरतमंद लोगों के लिए किसी भी प्रकार की परोपकारी क्रियाएं करना होता है। ज्यादातर संगठित धर्म परोपकार के व्यवहार का सहयोग एवं समर्थन करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता इस बात का विश्वास करते हैं कि जब तक पीड़ित व्यक्ति को किसी प्रकार की अस्थायी राहत मिलती है, परंतु परोपकार की भावना उन्हें लम्बे समय तक के लिए पुष्ट नहीं कर सकती है। इसीलिए स्वयं उस व्यक्ति की क्षमता में वृद्धि एवं विकसित करना आवश्यक होता है, तभी उपकार का सही भाव सिद्ध होगा।

प्रश्न 2. स्वैच्छिक क्रिया की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर–स्वैच्छिक क्रियाएं मूल रूप से स्वैच्छिक संगठन, सरकारी संगठनों की कार्यशैली और संरचना से अलग होती हैं। नौकरशाही और कानूनी प्रतिबंधों से मुक्त, ये संगठन अपनी कार्य संस्कृति को आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर सकते हैं। कुछ व्यक्तियों की इच्छा शक्ति उनके निर्माण में सरकार के प्रयत्नों से ज्यादा निर्णायक सिद्ध होती है। सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से निर्मित की गई स्वैच्छिक संस्थाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. स्वैच्छिक संगठन लोक कल्याण के लिए बनाए जाते हैं।

2. स्वैच्छिक संगठन प्राय: 'न लाभ न हानि' के आधार पर चलाए जाते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. ज्यादातर संगठन किसी विशेष क्षेत्र या विषय या समस्या पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनका उद्देश्य और लक्ष्य निश्चित होता है।

4. इनका कार्य बाह्य नियंत्रण से मुक्त होता है। संगठन के सदस्य संगठन की प्रणाली को निर्मित करते हैं। ऐसे संगठनों को निर्णय लेने की स्वायत्तता हासिल होती है।

5. स्वैच्छिक संगठनों की पहल एवं प्रशासन लोकतांत्रिक सिद्धांतों के आधार पर बिना किसी बाहरी नियंत्रण के इसके सदस्यों के माध्यम से स्वयं किए जाते हैं।

6. इन संगठनों द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों को सामाजिक मान्यता और सामुदायिक समर्थन प्राप्त होता है।

7. स्वैच्छिक संगठनों में शीर्ष प्रशासनिक प्राधिकरण के रूप में एक सामान्य निकाय होता है, जिसमें उस संगठन के वरिष्ठ अधिकारी, दाता या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति शामिल होते हैं, जो संगठन के नीति-निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

8. स्वैच्छिक संगठनों का निर्माण स्वयंसेवा पर निर्भर करता है।

9. सभी प्रकार के सम्भव तरीकों के माध्यम से मदद एवं उनके कल्याण को प्रोत्साहित करने की जरूरत एवं इसकी मौद्रिक रूप से आवश्यकता नहीं होती है।

10. मदद प्रदान करने के बदले में किसी वस्तु की इच्छा के लिए किसी प्रकार की अपेक्षा की अनुपस्थिति होती है।

11. मानवता के लिए सेवा की भावना पर विश्वास होता है।

12. एक व्यक्ति के अधिकार के संदर्भ में एक व्यक्ति के कर्त्तव्य को महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 3. समाज कार्य के लिए सामाजिक आन्दोलन का क्या महत्त्व है?

उत्तर–सामाजिक आंदोलन में एक सामान्य अभिमुखता अथवा किसी परिवर्तन को लाने (या रोकने) का तरीका होता है। ये विशिष्ट लक्षण स्थायी नहीं होते। ये सामाजिक आंदोलन की जीवन अवधि में बदल सकते हैं। जहां विरोध सामूहिक गतिविधि का सर्वाधिक मूर्त रूप है, वहीं सामाजिक आंदोलन समान रूप से महत्त्वपूर्ण अन्य तरीकों से भी कार्य करता है। इसलिए जबकि सामाजिक आंदोलन आमतौर पर नीति या सांस्कृतिक परिवर्तन उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं, अच्छे काम के लिए सामाजिक आंदोलन किसी मुद्दे या समर्थन और संसाधनों की आवश्यकता वाली आबादी के लिए जागरूकता पैदा करने और परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। एक सामाजिक आंदोलन एक जन आंदोलन और परिवर्तन लाने या किसी भी परिवर्तन का विरोध करने के लिए लोगों का सामूहिक प्रयास है। किसी भी सामाजिक आंदोलन की केंद्रीय अवधारणा यह है कि लोग जीवन के उतार-चढ़ाव में केवल दर्शक या निष्क्रिय भागीदार बने रहने के बजाय सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं। लोग इतिहास की दिशा बदलने में सक्रिय अभिनेता बनना चाहते हैं, जिस दुनिया में वे रहते हैं, उसमें बदलाव लाने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे या तो पहल करते हैं या सामूहिक कार्रवाई का हिस्सा बन जाते हैं।

व्यक्ति एक सामान्य उद्यम में संलग्नता की भावना के साथ सचेत रूप से मिलकर कार्य करते हैं। सामाजिक आंदोलनों में काफी मात्रा में आंतरिक व्यवस्था और उद्देश्यपूर्ण अभिविन्यास होता है। दरअसल, यही वह संगठन है, जो स्थापित संस्थाओं को चुनौती देने के आंदोलन को मजबूत करता है। एक सामाजिक आंदोलन को कमोबेश बदलाव लाने या विरोध करने के लिए लोगों के एक अपेक्षाकृत बड़े समूह की ओर से लगातार और संगठित प्रयास के रूप में वर्णित किया जा सकता है। जबकि किसी भी आंदोलन को सामूहिक कार्रवाई के रूप में वर्णित करने के लिए भाग लेने वाले व्यक्तियों की संख्या मानदंड नहीं है। आंदोलन के पास कार्य योजना का मार्गदर्शन करने और उसे क्रियान्वित करने के लिए एक नेता होना चाहिए और उसके पास आंदोलन को बनाए रखने की शक्ति होनी चाहिए। जबकि सामाजिक आंदोलन दबाव समूहों या संस्थागत आंदोलनों से भिन्न होते हैं। संस्थागत आंदोलन अत्यधिक संगठित, स्थायी और मुख्य रूप से व्यवसाय-आधारित होते हैं। सामाजिक आंदोलन स्वत:स्फूर्त होते हैं और उनका मुद्दा विशिष्ट होना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न 4. समाज कार्य के लिए सामाजिक संजाल का क्या महत्त्व है?

उत्तर–सामाजिक संजाल समाज कार्य के लिए अत्यधिक उपयोगी है, क्योंकि ये आवश्यक संसाधनों को गतिमान करने और स्वस्थ जनमत के निर्माण और लोगों के हितों को बढ़ावा देने, विशेष रूप से समाज के कमजोर और आघात पहुँचाने योग्य वर्गों, सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायता देने और सामाजिक बुराईयाँ, जो मानव विकास और लोगों की प्रभावी क्रिया में बाधा होती हैं। स्वैच्छिक संगठनों एवं सामाजिक संजाल समाज कार्यकर्ताओं की निम्न दशाओं में सहायता कर सकता है। यह उनके मध्य संसाधनों एवं सूचना की सहभागिता में मदद कर सकता है। दूसरे, एक आचार संहिता का विकास किया जा सकता है, जो कि समाज कार्य व्यवसायियों के व्यवहार पर नियंत्रण कर सकता है। तीसरे, सामाजिक संजाल के संगठन के माध्यम से व्यवसायियों के हितों के संरक्षण एवं वृद्धि करने को अपनाया जा सकता है। व्यक्तियों में प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास करना है और नागरिक अधिकार को प्राप्त करने में सहायता करना है।

समान रुचियों वाले गैर-सरकारी संगठन या स्वैच्छिक संगठन तथा समुदाय आधारित संगठन विशिष्ट प्रकार के क्षेत्रों में एक विशेष स्थान में काम कर रहे हैं जैसे एक शहर, कस्बा इस तरह संपूर्ण विश्व हो सकता है। ये सभी स्वयं का एक संजाल बनाने हेतु एक साथ-साथ आते हैं। इसमें गैर-सरकारी संगठन, समुदाय आधारित संगठन और स्वैच्छिक संगठन कुछ उचित प्रकार के उल्लिखित मामलों अथवा कार्यों हेतु सहमत होते हैं। अपने सामान्य हितों के संरक्षण एवं प्रोन्नति हेतु सामाजिक संजाल को स्थापित किया जाता है। समुदाय आधारित कार्य करने हेतु अपने सामाजिक संजाल को सक्षम करने के लिए एवं विधि के गठन करने के लिए अपना योगदान देते हैं। सामान्य रूप से सामाजिक संजाल पोषण कार्य के विशेष प्रकार के संदर्भों गैर-सरकारी संगठनों एवं समुदाय आधारित संगठनों के सदस्यों के स्वाभाविक हितों के संरक्षण एवं वृद्धि करने के लिए विभिन्नतापूर्ण विस्तृत कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का उतरदायित्व ग्रहण करते हैं तथा बहुस्तरीय कार्यों को संपन्न करते हैं।

सामाजिक संजाल में सामाजिक उन्नति एवं विकास के अवसर को उपलब्ध कराना है। लोगों में सामाजिक बुराइयों के प्रति चेतना जागृत करना है। पर्यावरण को साफ, स्वच्छ और विकास के अनुकूल

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com